3

सेक्स

सेक्स के प्रति नज़रिया

समरहिल आने वाले छात्र-छात्राओं में एक भी ऐसा नहीं था जो यौनिकता तथा शारीरिक क्रियाकलापों के प्रति एक बीमार नज़रिए के साथ न आया हो। आधुनिक माता-पिता के बच्चों का नज़रिया भी, जिन्हें बच्चों के जन्म का रहस्य समझा दिया गया हो, ठीक वैसा ही गुप्त होता है जैसा कि धार्मिक रूप से कट्टर माता-पिता के बच्चों का होता है। माता-पिता और शिक्षक का सबसे कठिन कार्य है सेक्स के प्रति एक नया अभिमुखीकरण तलाशना।

यौन वर्जनाओं के कारणों के बारे में हम इतना कम जानते हैं कि हम उनकी उत्पत्ति का केवल अनुमान भर लगा सकते हैं। यौन वर्जना क्यों है इससे मेरा तात्कालिक सरोकार नहीं है। पर यौन वर्जना है, यह हर किसी ऐसे व्यक्ति के लिए गहरे सरोकार का विषय है, जिस पर दमित बच्चों के उपचार की ज़िम्मेदारी हो।

हम वयस्क अपनी शैशवावस्था में ही भ्रष्ट कर दिए गए थे। हम यौन मसलों से कभी मुक्त नहीं हो सकते। *चेतन* स्तर पर हम स्वतंत्र हो सकते हैं। सम्भव है हम ऐसी किसी समिति के सदस्य हों जो बच्चों को यौन शिक्षा देने का काम करती हो। पर मुझे भय है कि *अवचेतन* रूप से हम वही बने रहते हैं जो हमें शैशव के अनुकूलन ने बना डाला है। सेक्स से घृणा करने वाले, सेक्स से डरने वाले।

मैं यह मानने को पूरी तरह तैयार हूँ कि यौन के प्रति मेरा अवचेतन नज़रिया, उस स्कॉटिश गाँव का कैल्विनिस्ट नज़रिया है जो जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में मुझ पर थोपा गया था। सम्भव है कि वयस्कों को इससे कभी मुक्ति न मिले। पर बच्चों को इससे मुक्ति मिलने की पूरी सम्भावना है। बशर्ते हम उन पर भी यौन सम्बंधी वही भद्दे विचार न लादें जो कभी हम पर लादे गए थे।

बचपन में ही बच्चे यह सीखते हैं कि यौनिक पाप, सबसे भारी पाप है। यौन नैतिकता से जुड़ी भूलों को माता-पिता कठोरतम सज़ा देते हैं। जो लोग फ्रॉयड पर यह आरोप लगाते हैं कि 'वह हरेक चीज़ में यौन ही देखता है' ठीक वे ही लोग यौन कथाएँ कहते और सुनते हैं, उन पर ठहाके लगाते हैं। जो लोग सेना से जुड़े रहे हैं, यह बखूबी जानते हैं कि सेना की भाषा यौन-भाषा है। लगभग सभी लोग इतवारी अखबारों में तलाक और यौन-अपराधों के चटपटे वर्णन पढ़ना पसन्द

करते हैं। अधिकतर पति अपने क्लबों के शराबखानों में सुने किस्से घर आकर अपनी बीबियों को सुनाते हैं।

यौन किस्सों से हमें जो मज़ा मिलता है वह यौन मसलों पर हमारी अस्वास्थ्यकर शिक्षा का ही नतीजा है। यौन में हमारी यह रुचि दमन का परिणाम है। फ्रॉयड के अनुसार सच्चाई स्वतः ही सामने आ जाती है। बच्चे में यौन जिज्ञासा की वयस्कों द्वारा निन्दा एक खालिस पाखण्ड है। यह निन्दा अपने अपराधबोध को दूसरों पर थोपने की कोशिश भर है। माता-पिता यौन सम्बंधी गल्तियों पर इसलिए कठोर दण्ड देते हैं क्योंकि वे स्वयं यौन अपराधों में बेहद रुचि रखते हैं, यद्यपि यह रुचि अस्वस्थ रुचि होती है।

ऐसा क्यों है कि शरीर सूली पर चढ़ाने की बात इतनी लोकप्रिय है? धार्मिक आस्थाओं वाले लोग कहेंगे कि शरीर ही व्यक्ति को पतन की ओर खींचता है। शरीर को घिनौना कहा जाता है, क्योंकि वही पाप की ओर बहकाता है, लुभाता है। शरीर के प्रति यही घृणा प्रसव के विषय को कक्षाओं के अँधेरे कोनों में धकेल देती है। और इस तरह जीवन के जगज़ाहिर तथ्य नम्र-वार्तालाप की आड़ में ढक जाते हैं।

फ्रॉयड यौन को इन्सानी आचरण में सबसे बड़ी ताकत मानते थे। ईमानदार अवलोकन करने वाले सभी लोग इससे सहमत होंगे। पर नैतिक-शिक्षा ने उस पर अधिकतम बल दिया है। बच्चे के अपने गुप्तांग को छूने पर माँ उसका पहला सुधार करती है। और यही टोकना गुप्तांग को दुनिया की सबसे मोहक और रहस्यमय वस्तु बनाता है। फल को वर्जित बनाना ही उसे सुस्वादु और सम्मोहक बनाना है।

बच्चे के दमन की जड़ है यौन-वर्जना। मैं *यौन* को केवल सम्भोग तक सीमित नहीं कर रहा। यह सम्भव है कि स्तनपान करता बच्चा भी इस बात से दुखी हो कि उसकी माँ अपने खुद के शरीर को नापसन्द करती है, या उस बच्चे को जो अपने खुद के शरीर में आनन्द लेता है, उसे अनुचित मान, ऐसा करने से रोकती हो।

जीवन के प्रति जितने नकारात्मक दृष्टिकोण हैं उनका आधार यौन है। जिन बच्चों में यौन को लेकर अपराधबोध नहीं होता उन्हें धर्म या रहस्यवाद की दरकार नहीं पड़ती क्योंकि यौन को भारी पाप माना जाता है। वे बच्चे जो यौन भय या यौन लज्जा से एक हद तक मुक्त हैं, ईश्वर से क्षमा या दया की भीख नहीं माँगते। ऐसा इसलिए क्योंकि वे अपराध बोध से ग्रसित नहीं होते।

जब मैं छह वर्ष का था, मैंने और मेरी बहन ने एक दूसरे के गुप्तांग तलाश लिए। स्वाभाविक था कि हम उनसे खेलने लगे। हमारी माँ ने हमें पकड़ा और जमकर धुनाई की। मुझे घण्टों तक एक अँधेरी कोठरी में बन्द रखा गया और फिर घुटनों के बल झुककर ईश्वर से क्षमा याचना करवाई गई।

इस प्रारम्भिक सदमे से उबरने में मुझे कई दशक लगे। सच तो यह है कि मैं अब तक यदाकदा यह सोचता हूँ कि मैं उससे पूरी तरह उबरा भी हूँ या नहीं।

आज के कितने वयस्कों को ठीक ऐसा ही अनुभव हुआ है? आज के कितने बच्चों के जीवन के प्रति स्वाभाविक प्रेम को ऐसे व्यवहार से घृणा और आक्रामकता में बदला जा रहा है? उन्हें बताया जाता है कि गुप्तांगों को छूना खराब काम या पाप है और नितान्त स्वाभाविक पखाना जाना घृणित है।

विल्हैल्म राइख अपनी पुस्तक *कैरेक्टर एनालिसिस* (चरित्र विश्लेषण) में बताते हैं कि नैतिकता प्रशिक्षण न केवल सोचने की प्रक्रिया को तोड़-मरोड़ देता है बल्कि शरीर संरचना तक में इस कदर उतर आता है कि व्यक्ति की भंगिमा को तनावपूर्ण बना देता है, उसके कूल्हे के हिस्से को सिकोड़ता है। मैं राइख से सहमत हूँ। समरहिल में सालों तक हर तरह के बच्चों के साथ काम करते हुए मैंने पाया है कि जब तक भय उनकी पेशियों को तान न दे वे बेहद खूबसूरती के साथ चलते, दौड़ते, कूदते और खेलते हैं।

बच्चों के यौन दमन को रोकने के लिए हम क्या कर सकते हैं? अव्वल तो यह कि शुरुआत से ही बच्चे को उसके शरीर के किसी भी हिस्से को छूने, उससे खेलने दें। मेरे एक मनोवैज्ञानिक मित्र को अपने चार वर्षीय पुत्र से कहना पड़ा, "बॉब बेटे, जब तुम अपरिचित लोगों के बीच में हो तो अपनी छुछ्छी से मत खेला करो। वे लोग इसे बुरा मानते हैं। ऐसा तुम केवल घर में या बाग में ही कर सकते हो।"

मेरे मित्र और मैंने इस बात पर चर्चा की और सहमत हुए कि बच्चों को जीवन-विरोधी, यौन-घृणा से भरे हुए लोगों से बचाना असम्भव है। केवल यह बात ही कुछ उम्मीद जगाती है कि अगर माता-पिता की जीवन में दृढ़ आस्था हो तो सम्भावना है कि बच्चा बाहरी छद्मलज्जा के बजाए माता-पिता के मानदण्डों को अपनाए। फिर भी यह तथ्य कि एक पाँच वर्षीय बालक यह समझ ले कि समुद्र में नंगे नहाना सम्भव नहीं है, उसमें एक तरह का यौन अविश्वास जगाता है। फिर चाहे यह अविश्वास गौण ही क्यों न हो। आज के कई माता-पिता हस्तमैथुन पर रोक नहीं लगाते। उन्हें लगता है कि यह स्वाभाविक है और इसके दमन के खतरों से भी वे अवगत हैं। बढ़िया! यह अच्छा है।

पर ठीक ऐसे ही माता-पिता अगले कदम से भयभीत हो जाते हैं। जब उनका बेटा दूसरे लड़कों के यौन खेल देखता है तो वे उसे भी झेल जाते हैं। पर जैसे ही एक नन्हा एक नन्ही लड़की के साथ यह खेल खेले तो वे भय से जड़ हो जाते हैं।

अगर हमारी नेकनीयत माँ ने मेरी एक साल छोटी बहन और मेरे यौन खेल को नज़रअंदाज़ कर दिया होता तो सम्भावना यह होती कि हम दोनों ही यौन के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण के साथ बढ़ पाते।

मैं अक़्सर विचार करता हूँ कि वयस्कों में पाई जाने वाली नपुंसकता और यौन-उदासीनता बचपन में इतरलिंगी (हेटरोसेक्श्युअल) यौन-खेल में किए गए पहले हस्तक्षेप का परिणाम हैं। मैं अचरज करता हूँ कि क्या समलैंगिकता, बचपन में वर्जित इतरलिंगी यौन-खेल के कारण पनपती है? मेरा मानना है कि बचपन में इतरलिंगी यौन-खेल वह पथ है जो वयस्क अवस्था में संतुलित यौन-जीवन की ओर ले जाता है। जब बच्चों को यौन सम्बंधी नीति उपदेश नहीं दिए जाते तो वे एक स्वस्थ्य किशोरावस्था तक पहुँचते हैं न कि स्वच्छन्द सम्भोग तक।

मैं युवक-युवतियों के प्रेम जीवन के बारे में एक भी ऐसा तर्क नहीं जानता, जिसमें कोई दम हो। ऐसे लगभग सभी तर्क दमित भावनाओं या जीवन के प्रति घृणा पर आधारित होते हैं। यह घृणा - धार्मिक, नैतिक, समयोचित, निरंकुश, अश्लीलतावादी - कोई भी हो सकती है। इनमें से कोई भी तर्क इस प्रश्न का जवाब नहीं देता कि अगर युवावर्ग अपने समाज में बड़े-बुजुर्गों की अनुमति के बिना उसका उपयोग नहीं कर सकते तो प्रकृति ने इन्सान को इतने ज़बरदस्त नैसर्गिक यौन आकर्षण से क्यों लैस किया है। इन्हीं बड़े-बुज़ुर्गों में कुछ ऐसे भी होंगे जिनके पास फिल्मी कम्पनियों के शेयर हों जो कामुकता से भरी फिल्में बनाते हों, या सौन्दर्य प्रसाधन की कम्पनियों के मालिक हों जो औरतों और पुरुषों को आकर्षक बनाने के लिए चीज़ें बनाते हों, या ऐसे प्रकाशक हों जो अपने पाठकों को ललचाने के लिए कामुक चित्र या कथाएँ छापते हों।

मैं जानता हूँ कि आज किशोरावस्था में यौन-जीवन व्यावहारिक नहीं है। पर मैं यह भी मानता हूँ कि भावी स्वास्थ्य का भी यही रास्ता है। मैं यह *लिख* सकता हूँ, पर अगर मैं समरहिल में अपने किशोरवय छात्र-छात्राओं को साथ सोने दूँ तो अधिकारी स्कूल ही बन्द करवा दें। मैं दूसरे ही कल की सोच रहा हूँ, उस वक्त की जब समाज यह समझ लेगा कि यौन दमन कितना खतरनाक है।

मैं यह उम्मीद नहीं करता कि समरहिल का प्रत्येक छात्र स्नायुरोगहीन होगा, क्योंकि आज के समाज में भला कौन मनोग्रन्थियों से मुक्त रह सकता है? पर मुझे यह उम्मीद ज़रूर है कि कृत्रिम यौन वर्जनाओं से मुक्त भावी पीढ़ियाँ अन्ततः एक ऐसी दुनिया रच सकेंगी जो जीवन प्रेमी हो।

समय के साथ गर्भनिरोधकों की खोज एक नई यौन-नैतिकता को जन्म देगी। इसलिए क्योंकि यौन-नैतिकता का सबसे महत्वपूर्ण घटक है परिणामों का भय। मुक्त होने के लिए ज़रूरी है कि प्रेम सुरक्षा का अहसास कराए।

आज युवावर्ग को सही अर्थ में प्रेम करने के अवसर नहीं मिलते। माता-पिता अपने बेटे-बेटियों को तथाकथित पाप में लिप्त नहीं देख सकते। यही कारण है कि नौजवान प्रेमी अब जंगलों या बागों या गाड़ियों में शरण लेते हैं। आज सब कुछ

हमारे नौजवानों के विरुद्ध है। इस प्रकार जो खूबसूरत और आनन्ददायक होना चाहिए वह बदशक्ल और पापमय वस्तु में, अश्लील, कुदृष्टि और शर्म भरी हँसी में परिवर्तित हो जाता है।

जो वर्जनाएँ और भय यौन आचरण को गढ़ते हैं वे ही उस विकृत व्यक्ति को भी रचते हैं जो बागों में नन्हीं बालिकाओं का बलात्कार कर उनका गला घोंट देते हैं, जो यहूदियों और नीग्रो लोगों को यातना देते हैं।

यौन वर्जनाएँ यौन को परिवार में स्थिर कर देती हैं। हस्तमैथुन वर्जना बच्चे के मन में माता-पिता के प्रति रुचि जगाती है। जब-जब माँ अपने बेटे को गुप्तांग छूने पर चपत लगाती है, बच्चे की नैसर्गिक कामुकता माँ की ओर केन्द्रित होती जाती है। और माँ के प्रति उसका गुप्त नज़रिया कामना और जुगुप्सा, प्रेम और घृणा का बन जाता है। दमन एक अमुक्त परिवार में फलता-फूलता है। दमन वयस्कों की सत्ता ज़रूर स्थापित करता है पर विविध प्रकार के स्नायुरोगों की कीमत पर।

अगर सेक्स को यह अनुमति दे देते हैं कि वह बाग की बाड़ पार कर पड़ोसी लड़के या लड़की तक पहुँच जाए तो घर की सत्ता को खतरा पैदा हो जाएगा। बच्चे पर माँ-बाप का शिकंजा ढीला पड़ जाएगा और स्वतः ही भावनात्मक रूप से वह परिवार को छोड़ देगा। सुनने में यह हास्यास्पद लग सकता है पर ये भावनात्मक बन्धन राज्य सत्ता के आधार स्तम्भ हैं। ठीक उसी तरह से जिस तरह वेश्यावृत्ति भले घरों की अच्छी लड़कियों को बचाने का एक आवश्यक तरीका है। यौन दमन को त्यागने का अर्थ होगा युवावर्ग को सत्ता की गिरफ़्त से खो देना।

माता-पिता वही करते हैं जो उनके माता-पिता ने उनके साथ किया था। वे बच्चों को ऐसे पालते-पोसते हैं कि वे लोक-लज्जाशील, काम-संयत बच्चे बने रहें। वे अपने बचपन की लुक-छुपकर चलने वाली कामक्रीड़ा और अश्लील कथाओं को, अपने माता-पिता के प्रति अपने कटु विद्रोह और अपराधबोध से उसे दबाने की अपनी कोशिशों को आसानी से भूल जाते हैं। वे यह जानते तक नहीं कि वे अपने ही बच्चों में ठीक वैसा ही अपराधबोध जगा रहे हैं जिसने उनको सालों पहले, बचपन में, त्रस्त किया था।

प्रारम्भ में गुप्तांग छूने की वर्जना के साथ ही इन्सान में गम्भीर मनोरोगों का सूत्रपात होता है। खबरदार जो हाथ लगाया! बाद के जीवन में परेशान करने वाली नपुंसकता, काम-उदासीनता और तनावों का सूत्रपात भी उसी समय ही हो जाता है जब गुप्तांग छूने का दण्ड हाथ झटककर या खींचकर तमाचों के साथ दिया जाता है। जिस बच्चे को गुप्तांग छूने की अनुमति मिलती है उसमें यौन के प्रति एक वास्तविक व प्रसन्न दृष्टिकोण पनपने की सम्भावना रहती है। छोटे बच्चों में यौन खेल एक स्वाभाविक और स्वस्थ क्रिया है जिस पर नाक-भौंह नहीं सिकुड़नी

चाहिए। बल्कि स्वस्थ किशोरावस्था और वयस्कावस्था के प्राक्कथन के रूप में उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। अगर माता-पिता इस बात से अनभिज्ञ हैं कि उनके बच्चे अँधेरे कोनों में यौन-खेल खेला करते हैं तो वे उस शुतुरमुर्ग के समान हैं जो खतरे से बचने के लिए अपना सिर रेत में घुसा लेता है। इस प्रकार की गुप्त, लुक-छिपकर खेली जाने वाली यौन क्रीड़ा, ऐसे अपराधबोध को जगाती है जो बाद के जीवन में भी बनी रहती है। यह अपरोधबोध बड़े होने पर, खुद माँ-बाप बनने पर अपने बच्चों की यौन क्रीड़ा को अनुचित मानने में झलकती है। उपाय एक ही है - यौन खेल को प्रकाश में लाना। दुनिया में यौन अपराधों की संख्या उस स्थिति में निश्चित रूप से कम हो जाएगी जब यौन खेल को स्वाभाविक मान लिया जा सकेगा। नैतिकतापरस्त माता-पिता यह देख नहीं पाते, या देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं कि हर प्रकार का यौन अपराध और हर प्रकार की यौन विकृति बचपन में, यौन को हेय दृष्टि से देखने का ही प्रत्यक्ष परिणाम है।

प्रख्यात मानवशास्त्री मैलिनोवस्की बताते हैं कि जब तक स्तम्भित मिशनरियों ने लड़के-लड़कियों को अलग-अलग छात्रावासों में रखना नहीं शुरू किया तब तक ट्रोब्रियैंडरों में समलैंगिकता का नामोनिशान तक नहीं था। बलात्कार व यौन अपराध जैसी चीज़ें उनमें नहीं थीं। क्यों भला? क्योंकि वहाँ छोटे बच्चों में यौन को लेकर कोई दमन नहीं किया जाता था। आज के माता-पिता के सामने सवाल यह है कि क्या हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे हमारी तरह हों? अगर हाँ, तो क्या समाज ऐसे ही बलात्कार और यौन हत्या, दुखी विवाहों और मनोरोगी बच्चों के साथ चलता रहे? अगर पहले प्रश्न का जवाब हाँ है तो दूसरे प्रश्न का भी हाँ ही होगा। ये दोनों ही उत्तर अणुविनाश का प्राक्कथन हैं क्योंकि दोनों इस घृणा की पूर्वमान्यता पर और युद्धरूपी घृणा की अभिव्यक्ति पर आधारित हैं।

मैं नैतिकतावादी माता-पिता से सवाल करता हूँः क्या आप उस वक़्त अपने बच्चों की यौन क्रीड़ा की खास चिन्ता करेंगे जब एटम बम गिर रहे हों? जब आणविक ऊर्जा के बादल जीवन को असम्भव बना रहे हों, उस वक़्त क्या आपको अपनी बेटी के कौमार्य की चिन्ता सताएगी? जब आपके पुत्रों को महामृत्यु के लिए सेना में भर्ती किया जा रहा हो उस वक़्त भी क्या आप अपने नन्हे गिरजाघर की उस आस्था से चिपके रहेंगे जो बचपन की सारी अच्छाइयों का दमन करती हो? क्या इस समय आपका ईश्वर, जिसकी आप आराधना करते हैं, आपकी और आपके बच्चों की जान बचाएगा?

शायद आपमें से कुछ यह जवाब दें कि यह जीवन तो शुरुआत है। पारलौकिक दुनिया में न घृणा होगी, न ही युद्ध और न ही सेक्स। अगर ऐसा है तो किताब बन्द कर दें - क्योंकि हमारा सम्पर्क ही स्थापित नहीं हुआ है।

मेरे लिए चिरजीवन एक स्वप्न है - समझ आ सकने वाला स्वप्न - क्योंकि मशीनी आविष्कारों के अलावा मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में असफल रहा है। पर यह सपना पर्याप्त नहीं है। मैं स्वर्ग को धरती पर देखना चाहता हूँ, ऊपर बादलों में नहीं। त्रासदी यह है कि अधिकतर लोग भी ठीक यही चाहते हैं। वे चाहते ज़रूर हैं, पर उस तक पहुँचने की इच्छाशक्ति नहीं है। क्योंकि यह इच्छाशक्ति पहले तमाचे, पहली यौन वर्जना के साथ विकृत हो चुकी है।

दरअसल माता-पिता मुंडेर पर नहीं बैठे रह सकते। तटस्थ नहीं रह सकते। उन्हें अपराध-बोध से ग्रसित गुप्त यौन और खेल या स्वस्थ और आनन्ददायी यौन में से किसी एक को चुनना होगा। अगर वे सामान्य नैतिक मानदण्डों को चुनते हैं तो फिर उन्हें यौन विकृत समाज की शिकायत भी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह समाज इसी नैतिक आचारसंहिता का नतीजा है। फिर माता-पिता युद्ध से घृणा भी नहीं कर सकते क्योंकि वे अपने बच्चों को आत्म घृणा का पाठ पढ़ाते हैं, वही तो युद्ध में अभिव्यक्त होता है। मानवता रोगग्रस्त है, भावनात्मक रूप से बीमार है। बचपन में सीखे अपराधबोध और दुश्चिंताओं के कारण बीमार है। समाज का भावनात्मक घुन हर कोने में व्याप्त है।

जब ज़ोई छह वर्ष की थी तो वह मेरे पास आई और बोली, "छोटे बच्चों में विली की छुछ्छी सबसे बड़ी है, परन्तु श्रीमती क (एक अतिथि) कहती हैं कि छुछ्छी कहना बुरी बात है।" मैंने उसे एक बार यह बताया था कि यह कोई बुरी बात नहीं है। मैंने मन ही मन उस महिला की अनभिज्ञता और बच्चों के बारे में उनकी नासमझी को गाली दी। मैं राजनीति या शिष्ट-आचरण के प्रचार को झेल सकता हूँ पर जब कोई व्यक्ति बच्चों पर हमला कर उनमें यौन अपराधबोध को जगाता है तो मैं पूरी ताकत से पलटकर लड़ता हूँ।

सेक्स के प्रति हमारे अश्लील दृष्टिकोण, संगीत सभागारों में हमारे ठहाके और पेशाबघरों में लिखी अश्लील बातें बचपन में हुए हस्तमैथुन और कोनों में खेले गए पारस्परिक यौन खेलों के दमन से उपजे अपराधबोध का नतीजा हैं। हरेक परिवार में गुप्त रूप से यौन क्रीड़ा चलती है। इसी गुप्तता और अपराधबोध के कारण भाई-बहनों के बीच ऐसे स्थिर भाव-बंधन बनते हैं जो आजीवन बने रहते हैं और मधुर विवाह असम्भव बना देते हैं। अगर पाँच वर्ष की आयु में भाई-बहनों के बीच यौन खेलों को स्वाभाविक मान स्वीकार कर लिया जाए तो वे क्रमशः परिवार के बाहर के व्यक्ति में अपनी भावनाएँ केन्द्रित करने से आज़ाद हो सकेंगे।

यौन घृणा का निकटतम रूप सैडिज़्म में दिखाई पड़ता है। जिस व्यक्ति का यौन-जीवन खुशियों भरा है वह किसी को यातना नहीं देता और न ही कारागारों के पक्ष में होता है। यौन-तृप्त महिला नाजायज़ बच्चे की माँ को अपराधी नहीं मानती।

यह सब कहकर मैं खुद पर इसी लांछन की सम्भावना बढ़ा रहा हूँ कि इस आदमी के सिर पर सेक्स का भूत सवार है। जीवन में यौन ही तो सब कुछ नहीं है। यहाँ दोस्ती, काम-काज, आनन्द और दुख भी तो हैं। फिर यौन ही की बात क्यों?

मेरा उत्तर हैः सेक्स ही जीवन का श्रेष्ठतम आनन्द है। प्रेममय सेक्स परमानन्द का श्रेष्ठतम रूप है। ऐसा इसलिए क्योंकि यही देने और पाने का श्रेष्ठतम रूप है। फिर भी यौन से ज़ाहिराना तौर पर घृणा की जाती है। क्योंकि ऐसा न होता तो कोई भी माँ हस्तमैथुन को वर्जित क्यों करती, कोई पिता विवाह के बाहर के यौन सम्बंध को वर्जित क्यों करता? अगर वर्जनाएँ न होतीं तो विविध मनोरंजन सभागारों में अश्लील मज़ाक क्यों होते और जनसामान्य प्रेमकथाओं की फिल्में क्यों देखते, प्रेम कथाएँ क्यों पढ़ते, वे सीधे प्रेम आचरण ही करते।

यह तथ्य कि तकरीबन हरेक चलचित्र में प्रेम प्रसंग दिखाया जाता है यह सिद्ध करता है कि जीवन का सबसे महत्वपूर्ण घटक - प्रेम है। इन चलचित्रों में लोगों को रुचि इसलिए होती है क्योंकि लोगों में मनोविकार हैं। यह रुचि अपराधबोध और यौन दमन से ग्रसित लोगों की रुचि है। क्योंकि वे स्वाभाविक प्रेम नहीं कर पाते - वे सिनेमाघरों में उन कथाओं को देखते हैं जो प्रेम को रूमानी और सुन्दर बनाकर प्रस्तुत करते हैं। यौन दमन के शिकार लोग यों दूसरों के माध्यम से अपनी यौन रुचियों को शान्त करते हैं। जिस स्त्री या पुरुष का प्रेम जीवन संतोषजनक हो वह सप्ताह में दो दिन उन घटिया फिल्मों पर क्योंकर बर्बाद करेगा जो वास्तविकता की नकल पेश करती हैं।

ठीक यही बात लोकप्रिय उपन्यासों के बारे में भी कही जा सकती है। ये उपन्यास अमूमन यौन या अपराध या इन दोनों के मिश्रण को सामने रखती हैं। *गॉन विद द विंड* नामक लोकप्रिय उपन्यास इसलिए प्रसिद्ध नहीं हुआ था क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि अमरीकी गृहयुद्ध या गुलामों की थी, बल्कि इसलिए क्योंकि वह एक थकाऊ, आत्मकेन्द्रित लड़की के प्रेम प्रसंगों पर केन्द्रित था।

फैशन पत्रिकाएँ, सौन्दर्य प्रसाधन, अंग प्रदर्शन, सम्भ्रान्त-कृत्रिम समीक्षाएँ, काम कथाएँ - सभी यही दर्शाते हैं कि जीवन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु है सेक्स। पर वे सब यह भी शिकायत करते हैं कि यौन के बाहरी आवरण को ही सामाजिक अनुमोदन है - अर्थात शब्दों को, काल्पनिक कथाओं को, चलचित्रों को, अंग प्रदर्शन को।

विख्यात लेखक डी एच. लॉरेंस ने यौन चलचित्रों के उपन्यास की ओर संकेत किया था, जहाँ यौन दमन का शिकार एक नौजवान अपनी परिचितों में से किसी लड़की में रुचि लेने से डरकर अपनी मनोभावनाएँ हॉलीवुड की किसी अभिनेत्री पर उँडेलता है और फिर घर लौटकर हस्तमैथुन करता है। लॉरेंस यह नहीं कह रहे थे कि हस्तमैथुन गलत है, बल्कि वे यह कह रहे थे कि अस्वस्थ मानसिकता

ही हस्तमैथुन की मदद से एक फिल्मी अभिनेत्री के साथ काल्पनिक कामक्रीड़ा पर उसे मजबूर करती है। स्वस्थ यौन में वह निश्चित रूप से अपने परिवेश में ही किसी संगिनी को तलाशता। यौन-दमन के कारण फलने-फूलने वाले निहित-स्वार्थ की ज़रा कल्पना तो कीजिए, फैशन से जुड़े लोग, लिपस्टिक व्यापारी, चर्च, थियेटर, सिनेमाघर, चलचित्र, लोकप्रिय उपन्यास लेखक और स्टॉकिंग उत्पादक।

मैं अगर यह कहूँ कि यौन मुक्त समाज में सुन्दर वस्त्र नहीं होंगे तो बेवकूफी होगी। प्रत्येक महिला अपने प्रेमी के समक्ष सुन्दर लगना चाहती है। प्रत्येक पुरुष अपनी महिला मित्र के सामने सुरुचिपूर्ण तरीके से सज्जित होना चाहता है। मतलब मुक्त समाज में जो गायब होगा वह है वस्त्रों की कामोत्तेजकता। वास्तविकता वर्जित होने के कारण छाया को मूल्यवान मानना समाप्त हो जाएगा। काम-दमित पुरुष अन्दरूनी वस्त्र खरीदती औरतों को नहीं घूरेंगे। यह अफसोस की बात है कि काम रुचियाँ इस कदर दमित की जाती हैं। दुनिया में सबसे अच्छा आनन्द अपराधबोध के साथ ही उपलब्ध होता है। यह दमन मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। जीवन को संकीर्ण, दुखद और घृणा से भरपूर बना डालता है।

यौन से घृणा का अर्थ है जीवन से घृणा करना। यौन से घृणा करने का अर्थ है अपने पड़ोसी से प्रेम न कर पाना। अगर आप यौन से घृणा करते हैं तो आपका निजी यौन-जीवन नपुंसकता या यौन उदासीनता से ग्रस्त होगा, वह अपूर्ण होगा। यही कारण है कि जिन महिलाओं के बच्चे हो चुके हैं वे कहती हैं, "मन बहलाने के तरीके के रूप में सेक्स की कीमत ज़रूरत से ज़्यादा आँकी जाती है।" नैसर्गिक कामेच्छा ज़बरदस्त होती है। ज़ाहिर है कि अगर निजी यौन अनुभव असन्तोषजनक हो तो इस नैसर्गिक भावना को कोई दूसरा रास्ता तलाशना पड़ता है। ऐसे में वह दुश्चिन्ता और घृणा की राह पकड़ती है।

अधिकतर वयस्क यौन को देने की क्रिया के रूप में नहीं देखते, ऐसा करते तो नपुंसकता और यौन उदासीनता से ग्रसित लोगों की संख्या सत्तर फीसदी नहीं होती, जैसा कई विशेषज्ञ बताते हैं। कई पुरुषों के लिए सम्भोग शिष्ट बलात्कार ही है, कई महिलाओं के लिए एक ऐसी रीति जिसे झेलना ज़रूरी है। हज़ारों विवाहित महिलाएँ ऐसी हैं जिन्होंने अपने जीवन में कभी कामोत्ताप (ऑरगैज़्म) का अनुभव ही नहीं किया है। और तो और कई सुशिक्षित पुरुष भी यह नहीं जानते कि महिलाओं में कामोत्ताप की क्षमता भी होती है। ऐसी व्यवस्था में देना तो न्यूनतम ही होता है और ज़ाहिर है कि यौन-सम्बंध भी बर्बर और अश्लील ही होंगे। जिन विकृत लोगों को यौन सन्तोष के लिए औरतों को कोड़ों से या फिर छड़ियों से पीटना पड़ता है, वे तो यौन कुशिक्षा के अतिवादी उदाहरण भर हैं। वे केवल तब ही प्रेम दे पाते हैं जब उसे घृणा के बाने में ढँक दें।

समरहिल में पढ़ने वाला प्रत्येक बड़ा छात्र मेरी बातचीत और मेरी पुस्तकों से यह जानता है कि मैं उन सबके सम्पूर्ण यौन जीवन का अनुमोदन करता हूँ, जिनमें इसकी चाहत है। फिर चाहे वह किसी भी आयु का क्यों न हो। अपने भाषणों के दौरान मुझसे अक्सर पूछा गया है कि क्या मैं समरहिल में छात्र-छात्राओं को गर्भनिरोधक उपलब्ध करवाता हूँ, अगर नहीं तो क्यों नहीं? यह एक ऐसा टेढ़ा सवाल है जो हम सबकी गहनतम भावनाओं को छूता है। मैं गर्भनिरोधक उपलब्ध नहीं करवाता और यह मेरे लिए विवेक विरोधी मसला है। क्योंकि किसी भी प्रकार का समझौता मुझे कठिन और चिन्ताजनक लगता है। पर दूसरी और बालिग या नाबालिग बच्चों को गर्भनिरोधक उपलब्ध करवाना स्कूल बन्द करवाने का सुनिश्चित रास्ता होगा। व्यक्ति कानून को लाँघकर अपने सिद्धान्तों को अमल में नहीं ला सकता है।

बच्चों की आज़ादी के समालोचक एक आम सवाल पूछते हैं, "आप किसी छोटे बच्चे को सम्भोग क्रिया क्यों नहीं देखने देते?" यह जवाब कि उसे सदमा पहुँचेगा, मानसिक धक्का लगेगा, दरअसल गलत जवाब है। मैलिनोव्स्की के अनुसार ट्रोब्रिएंडर बालक सहज ही न केवल अपने माता-पिता की सम्भोग क्रिया देखते हैं बल्कि जन्म और मृत्यु को भी सहजता से देखते हैं। और इसका उन पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। आत्मसंचालित बच्चा अगर सम्भोग क्रिया देखता है तो उस पर विपरीत भावनात्मक प्रभाव नहीं होगा। उपरोक्त प्रश्न का सही जवाब यह है कि हमारी संस्कृति में प्रेम एक सार्वजनिक मसला नहीं है।

मैं यह नहीं भूल रहा हूँ कि कई ऐसे भी माता-पिता हैं जो यौन को धार्मिक या किसी दूसरे नकारात्मक कारण से पाप मानते हैं। उनका कुछ भी इलाज नहीं है। उनको हम अपने विचारों से सहमत नहीं कर सकते। फिर भी जब वे हमारे बच्चों की आज़ादी पर हमला करें, तो हमें उन्हें रोकना होगा। दूसरे माता-पिताओं से मैं कहता हूँ: आपका सबसे बड़ा सरदर्द तब आएगा जब आपकी बिटिया सोलह बरस की हो जाएगी और अपना जीवन जीना चाहेगी। वह देर रात लौटेगी। खबरदार, किसी भी सूरत में उससे यह न पूछना कि वह कहाँ थी। क्योंकि अगर वह आत्मसंचालित नहीं है तो वह आपसे झूठ बोलेगी, ठीक उसी तरह का झूठ जो आपने आपने माता-पिता से बोला था।

जब मेरी बिटिया सोलह साल की हो जाए और मैं उसे किसी असंवेदनशील पुरुष के प्रेम में डूबा हुआ पाऊँ तो मेरी कई चिन्ताएँ होंगी। मुझे पता है कि मैं कुछ भी करने में अशक्त होऊँगाा। मैं उम्मीद ही कर सकता हूँ कि मैं समझदारी बरतते हुए कोई कोशिश करूँ ही नहीं। क्योंकि वह आत्ममर्यादित है, मुझे यह नहीं लगता कि वह किसी अवांछनीय नौजवान के चक्कर में फँसेगी। पर इस विषय में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

मेरा विश्वास है कि अवांछनीय लोगों की संगत में रहना मूलतः माता-पिता की सत्ता के प्रति विद्रोह ही होता है। *मेरे माता-पिता मुझ पर विश्वास नहीं करते, तो मुझे भी उनकी परवाह नहीं। मैं वही करूँगा जो मुझे अच्छा लगे। अगर उन्हें वह नापसन्द है तो वे भाड़ में जाएँ!*

आपको डर है कि कहीं आपकी बिटिया को कोई बहका न दे। पर सच है कि अमूमन लड़कियों को कोई बहलाता-फुसलाता नहीं है। वे बहकने की प्रक्रिया में भागीदार होती हैं। अगर आपकी बिटिया आपकी मातहत होने के बदले आपकी मित्र है तो यह सोलहवें साल की स्थिति इतनी कठिन नहीं रहती। आपको यह तथ्य स्वीकारना होगा कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे का जीवन नहीं जीता। यह भी कि भावनात्मक मसलों जैसी अहम चीज़ों का अपना निजी अनुभव हम किसी दूसरे को नहीं सौंप सकते।

मूल प्रश्न यह है कि घर में सेक्स के प्रति दृष्टिकोण क्या है? अगर यह नज़रिया स्वस्थ है तो आप अपनी बेटी को उसके लिए निजी कमरा देंगे, मय उसकी चाबी के साथ। अगर नज़रिया अस्वस्थ है तो वह गलत तरीकों से यौन-अनुभव तलाशेगी। गलत पुरुषों की सोहबत में और आप पूरी तरह लाचार होंगे।

यही बात आपके बेटे पर लागू होती है। आप उसकी चिन्ता इसलिए नहीं करते क्योंकि वह गर्भवान नहीं बनता। पर ध्यान रहे कि गलत यौन दृष्टिकोण उसके भी जीवन को बर्बाद कर सकता है।

बिरले विवाह प्रसन्न विवाह होते हैं। शैशवावस्था में हम जिस प्रकार बच्चों को प्रशिक्षित करते हैं उससे तो आश्चर्य इसी बात में होता है कि स्वस्थ व प्रसन्न विवाह फिर भी नज़र आते हैं। क्योंकि अगर शिशुशाला में सेक्स गन्दा है तो फिर दाम्पत्य की शैय्या में वह कैसे साफ-सुथरा रह सकता है।

जिस विवाह में यौन सम्बंध असफल हो, वहाँ शेष दूसरी चीज़ें भी असफल होंगी। दुखी दम्पत्ति जिन्हें सेक्स से घृणा करने के लिए ही पाला-पोसा गया है, एक-दूसरे से घृणा ही करेंगे। उनके बच्चे इसलिए असफल रहेंगे क्योंकि उन्हें अपने जीवन के लिए घर में जो स्नेह-प्रेम की ऊष्मा चाहिए वह नामौजूद थी। माता-पिता में मौजूद यौन-दमन उन्हें भी अचेतन रूप से उसी दमन का शिकार बनाता है। ऐसे ही माता-पिता के बच्चे जटिलतम समस्याओं के शिकार होते हैं।

यौन निर्देश

अगर माता-पिता बच्चे के सवालों के उत्तर ईमानदारी के साथ बिना झिझक के दें तो यौन निर्देश, बचपन का नैसर्गिक हिस्सा बन सकता है। यौन निर्देश का अर्धवैज्ञानिक तरीका खराब है। मैं एक नौजवान को जानता हूँ जिसे इस तरीके से यौन शिक्षा दी गई थी। उसका कहना है कि जब कोई *पुंकेसर* शब्द का इस्तेमाल करता है तो उसका चेहरा शर्म से लाल हो उठता है। यौन सम्बंधी तथ्य महत्वपूर्ण हैं पर उनसे अधिक महत्वपूर्ण हैं उससे जुड़ी भावनाएँ। चिकित्सक सेक्स का शरीर विज्ञान बखूबी समझते हैं, पर इसका अर्थ यह नहीं कि वे दक्षिण समुद्र द्वीपवासियों से बेहतर प्रेमी भी हों। सम्भवतः वे उनकी बराबरी भी नहीं कर पाएँगे।

बच्चे की पिता के इस कथन में रुचि नहीं होती कि पिता अपना लिंग माँ की योनि में डालता है। वह तो यह जानना चाहता है कि आखिर *पिता ऐसा करता क्यों है*। अगर बच्चे को उसके यौन खेल की अनुमति होती तो उसे क्यों पूछने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती।

किसी आत्म-संचालित बच्चे को यौन निर्देशों की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। क्योंकि निर्देश शब्द यह संकेत देता है कि इस विषय की पहले उपेक्षा की गई है। अगर बच्चे की स्वाभाविक जिज्ञासा को शुरू से ही खुलेपन के साथ सवालों का उत्तर देकर शान्त किया जाए तो फिर सेक्स अलग से खासतौर से सिखाए जाने वाले विषय का रूप भी न लेगा। हम बच्चे को उसके पाचनतंत्र और मलत्याग क्रिया के बारे में भी तो नहीं बताते। *यौन निर्देश* नामक शीर्षक इसी बात से उपजता है कि यौन गतिविधि को लेकर संकोच किया जाता है। उसे रहस्यमय बनाया जाता है।

पब्लिक स्कूलों के पाठ्यक्रम में यौन-निर्देश का समावेश यौन दमन और नीति उपदेश को प्रोत्साहित करने का खतरनाक अवसर देता है। *यौन-निर्देश* का शीर्षक शरीर विज्ञान और शरीर क्रिया पर एक औपचारिक और भद्दे पाठ का संकेत देता है। ऐसा पाठ जो एक भीरू शिक्षक इस डर के साथ पढ़ाता है कि कहीं वह वर्जित क्षेत्र में न बहक जाए।

अधिकांश पब्लिक स्कूलों में प्रेम और जन्म के बारे में पूरा सच बताने का अर्थ होगा फौरन नौकरी से निकाल दिया जाना। माताओं द्वारा व्यक्त की गई सार्वजनिक राय

इसे सहन नहीं करेगी। मैं ऐसे कई उदाहरण जानता हूँ जब नाराज़ माता ने महिला शिक्षिका को खतरनाक नतीजों से आगाह किया है क्योंकि शिक्षिका बच्चों को 'गन्दी ईश्वरहीन अश्लील शिक्षा दे रही थी।'

दूसरी ओर मुक्त बालक को यौन सम्बंधी सभी जानकारी देने में कठिनाई यह होती है कि वह जो कुछ पूछे उसे स्पष्टता के साथ कैसे बताया जाए। क्योंकि बच्चा यह जानना चाहेगा कि हरेक नर घोड़ा या नर भेड़ अपनी मादा को गर्भवती क्यों नहीं बना पाता। ऐसे सवालों के उत्तर उन अवधारणाओं को समेटते हैं जो एक चार वर्षीय बालक की समझ के परे हैं। बधियाकरण (कैस्ट्रेशन) की प्रक्रिया उसे सरल शब्दों में समझाई नहीं जा सकती। ऐसे में प्रत्येक माता-पिता को अपनी राह खुद तलाशनी होगी यह ध्यान रखते हुए कि झूठ बोलना या टालना गलत होगा।

एक पाँच वर्षीय बच्चे को अपने पिता की जेब में निरोध का पैकिट मिला। स्वाभाविक ही था कि उसने जानना चाहा कि यह क्या है। उसके पिता ने उसे जो साफ और सरल स्पष्टीकरण दिया उसे बच्चे ने बिना उद्वेलित हुए स्वीकार लिया।

कुछ दृष्टान्तों में यह भी आपत्तिजनक नहीं लगता कि बच्चे से कहा जाए कि विषय काफी कठिन है और उसे बाद में ही समझाया जा सकेगा। क्योंकि यह उत्तर तमाम दूसरे विषयों के बारे में भी दिया जाता है। उदाहरण के लिए अगर बच्चा पूछे कि इंजन कैसे काम करता है या भगवान को किसने बनाया, तब भी माता-पिता यही कहते हैं कि बड़े होने पर ही बात समझ पाओगे।

उत्तर को फिलहाल स्थगित करना उस स्थिति से बेहतर है जब बच्चे को कुछ ज़्यादा ही बता दिया जाए। मुझे एक पन्द्रह वर्षीय स्विस लड़की याद आ रही है जिसने मुझे बताया, "इर्मगार्ट (दस वर्षीय) सोचती है कि बच्चों को डॉक्टर लाते हैं। पर मुझे तो काफी पहले से मालूम था कि बच्चे कहाँ से आते हैं। मुझे माँ ने बताया था। उसने मुझे और भी बातें बताई थीं।"

मैंने पूछा कि वह और क्या जानती है। इस पर उसने मुझे समलैंगिकता और यौन विकृतियों के बारे में बताया। यह विवेकहीन सत्य-बयानी का उदाहरण है। माँ को उन्हीं सवालों के जवाब देने चाहिए थे जो बच्चे ने पूछे थे। बाल प्रकृति की अज्ञानता ने उस बच्चे को वह सब बताने दिया जो बच्चा जज़्ब नहीं कर सकता। परिणाम था एक मनोरोगी बेटी। फिर भी यह अज्ञानी माँ उन माताओं से बेहतर थी जो जन्म के रहस्य पर सवाल करने पर अपने बच्चों से जानबूझकर झूठ कहती हैं। लेकिन बच्चे को जल्दी ही यह पता चल जाता है कि उसकी माँ ने उससे झूठ बोला था। जब उसे सच्चाई का पता चलता है, जो अमूमन उसका कोई साथी अश्लील तरीक़े से बताता है, वह यह समझ जाता है कि माँ ने झूठ क्यों बोला होगा। *आखिर इतनी गन्दी बात माँ उसे बताती भी कैसे!*

प्रसव के प्रति भी समाज का यही नज़रिया है। यह गन्दी और शर्मनाक बात है। जिस प्रकार गर्भवती माताएँ अपनी स्थिति को छुपाने की चेष्टा करती हैं, वह हमारी नैतिकता की भर्त्सना के लिए काफी है।

ऐसी भी माताएँ हैं जो अपने बच्चों को शिशुओं के बारे में सच बताती हैं। पर इन सच बताने वाली माताओं में भी ऐसी होती हैं जो प्रसव के बारे में सच बताने के बावजूद सेक्स के बारे में झूठ बोलती हैं। वे बच्चों को यह बताना टालती हैं कि सम्भोग आनन्ददायक भी होता है।

मेरी पत्नी और मुझे ज़ोई की यौन शिक्षा को लेकर सोच-विचार नहीं करना पड़ा। यह बड़ा सरल सहज और सुन्दर काम रहा है - यद्यपि इसके कई पल काफी उलझन पैदा करने वाले भी थे। एक अविवाहित महिला अतिथि को ज़ोई ने बताया कि उसका जन्म इसलिए हो पाया क्योंकि डैडी ने माँ को गर्भाधान करवाया। साथ ही उसने बड़ी रुचि से जानना चाहा, "आपको किसने गर्भाधान करवाया?"

आत्मसंचालित बच्चों के बारे में एक तथ्य हमने यह भी पाया है कि वे कम उम्र में ही व्यवहार कुशल बन जाते हैं। साढ़े तीन साल की उम्र में ज़ोई ऐसे सवाल पूछ लेती थी, पर पाँच साल की होते-होते उसे अहसास होने लगा कि कुछ बातें, कुछ लोगों के सामने नहीं की जानी चाहिए। ऐसी ही व्यावहारिक कुशलता मैंने ऐसे बच्चों में भी पाई है जो शुरू से आत्मसंचालित नहीं थे।

फ्रॉयड द्वारा छोटे बच्चों में सकारात्मक कामुकता की खोज के बाद उसके लक्षणों का अधिक अध्ययन नहीं हुआ है। शिशुओं की कामुकता पर पुस्तकें लिखी गई हैं पर आत्मसंचालित बच्चों पर किसी ने कुछ नहीं लिखा है। हमारी बेटी ने अपने, अपने माता-पिता या साथियों के सेक्स में खास रुचि कभी नहीं दिखाई। उसने हमें गुसलखाने या शौचालय में नग्नावस्था में देखा। मुझे इस बात से सन्तोष हुआ कि उसने कुछ मनोवैज्ञानिकों के इस सिद्धान्त को गलत सिद्ध कर दिया कि बच्चे में एक अंतर्निहित सलजता होती है जिसके कारण वह वयस्कों के गुप्तांग को या प्राकृतिक कार्यों को देखकर शर्म महसूस करता है। यह सिद्धान्त उतना ही बकवास है जितना हस्तमैथुन से जुड़ा अन्तर्निहित अपराध-बोध का सिद्धान्त है।

आत्मसंचालित बच्चों के माता-पिता यौन शिक्षा से जुड़ी खतरनाक व बेवकूफी भरी तमाम भूलों से सम्भवतः बच भी सकें। उन भूलों से जो सेक्स को गलत या पाप से जोड़ते हैं। परन्तु एक और खतरा है - यह खतरा आदर्शवादियों की ओर से है। आत्मसंचालन की चर्चा प्रारम्भ होने से काफी पहले कुछ माता-पिता ऐसे थे जिन्होंने अपने बच्चों को यह सिखाया था कि सेक्स पवित्र और आध्यात्मिक वस्तु है। ऐसा कुछ जिसे विस्मय से, रहस्यमय या धार्मिक श्रद्धा के साथ देखा जाना चाहिए। सम्भव है कि आधुनिक माता-पिता इस तरह के लोभ से बच जाएँ, पर

फिर भी इसके ही समान किसी दूसरी राह को पकड़ लें। वे यौन क्रिया को नवदेवता मान, उसकी आराधना करने लगें। इसे परिभाषित करना कठिन है - सम्भवतः यह परिभाषा के लिए अस्पष्ट भी है - पर मुझे यह अहसास होता है कि कुछ लोगों में सेक्स के प्रति एक अजीब-सी पवित्रता का भाव मिलता है। उसका उल्लेख करते ही उनकी आवाज़ में एक हल्का-सा बदलाव आ जाता है। यह दृष्टिकोण अश्लीलता के प्रति भय का संकेत देता है, *हे भगवान, अगर मैं सेक्स की चर्चा करते समय अपनी आवाज़ में विस्मय नहीं डालूँगा तो लोग सोचेंगे कि मैं भी उन लोगों में से एक हूँ जो सेक्स को लेकर घटिया मज़ाक करते हैं।* जब मैं नौजवान माता-पिता को उन शब्दों और स्वरों का इस्तेमाल करते पाता हूँ, जो उन पुरातन लोगों के शब्दों और सुरों से अधिक भिन्न नहीं जो शरीर के कुछ हिस्सों को पवित्र मानते थे, तो मुझे चिन्ता होती है। इतने लम्बे समय से सेक्स अश्लील मज़ाक का हिस्सा रहा है कि लोग उसकी प्रतिक्रिया के रूप में विपरीत छोर तक कूद जाते हैं, उसकी चर्चा को ही वर्जित कर देते हैं, इसलिए नहीं कि वह पाप है, बल्कि इसलिए कि वह बेहद पवित्र है। ज़ाहिर है कि ऐसा दृष्टिकोण एक नई तरह के यौन भय और दमन तक ले जाएगा। अगर हम बच्चे में सेक्स के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण और कालान्तर में उसके स्वस्थ यौन जीवन को चाहते हैं तो सेक्स को हमें धरती पर रहने देना होगा। उसमें स्वतः ही सब कुछ मौजूद है। उसे ऊपर उठाने की चेष्टा कुछ ऐसी होगी जैसे कमल में रंग भरने की।

बच्चों को यह बताना कि सेक्स पवित्र है, उसी पुरानी कथा का रूपान्तर होगा कि सभी पापी नर्क में जाएँगे। अगर आप खाने-पीने और हँसने को भी पवित्र कहने को तैयार हैं तो मैं उस समय भी आपके साथ होऊँगा जब आप सेक्स को पवित्र कहेंगे। हम *सब कुछ* को पवित्र कह सकते हैं। पर अगर हम केवल सेक्स को पवित्रता का बाना उढ़ाएँगे तो हम खुद से झूठ कह रहे होंगे और अपने बच्चों को भरमाएँगे। पवित्र तो बच्चा है - पवित्र इस अर्थ में कि वह अज्ञानी शिक्षकों द्वारा दूषित नहीं किया गया है।

जैसे-जैसे सेक्स के प्रति धार्मिक घृणा मर रही है, नए शत्रु भी पैदा हो रहे हैं। आज यौन शिक्षक उत्साही हैं जो बच्चों को तमाम चित्र दिखाकर उन्हें, मधुमक्खियों और पुंकेसर की बात बताते हैं। ऐसा करते समय वे दरअसल यह कहते हैं,"देखो, सेक्स महज़ विज्ञान है। उसमें कुछ भी तो उत्तेजक नहीं है।" यौन को लेकर हम सब इस कदर अनुकूलित हो चुके हैं कि हम उस मध्यम व स्वाभाविक मार्ग को देख तक नहीं पाते। हम या तो अति यौन समर्थक हैं या अति यौन विरोधी। यौन समर्थक होना अच्छी बात है पर बचपन में दिए गए यौन विरोधी प्रशिक्षण का विरोध करने के लिए यौन समर्थन मनोरोग की सम्भावना दर्शाता है। यौन के प्रति एक विवेकपूर्ण नज़रिया तलाशना ज़रूरी है। और ऐसा दृष्टिकोण हमें बच्चे की

स्वाभाविक यौन प्रवृत्तियों में हस्तक्षेप नहीं करने, बल्कि उसका अनुमोदन करने में ही मिलेगा।

अगर यह आपको अस्पष्ट या असम्भव लगता है तो नौजवान माता-पिताओं को मेरा सुझाव यह है कि वे यौन मसलों पर चर्चा करते समय शर्म या घृणा या नैतिक भावनाएँ दर्शाने से बचें। वे कोई उपदेश देने से, पड़ोसियों को तुष्ट करने से बचें। तब ही, केवल तब ही, एक शिशु का यौन दृष्टिकोण अपने शरीर के प्रति संकोच या घृणा के बिना, विकसित हो सकेगा। ऐसे बच्चे के लिए सेक्स न तो निर्देश, न चेतावनी या किसी अन्य वस्तु का विषय बन सकेगा।

अगर हम यौन में पाप देखने की वृत्ति से बच्चों को बचा सकें तो वह निश्चित रूप से एक नीतिवान मनुष्य बनेगा - महज़ नीति उपदेशक नहीं, मात्र दूसरों को शिक्षा देने वाला नहीं। जो डॉन जुआन यौन के आनन्द पक्ष को तो पूरा करता प्रतीत होता है पर उसके प्रेम पक्ष को नकारता है। हस्तमैथुन, डॉन जुआनवाद, समलैंगिकता आदि अनुत्पादक हैं, इसलिए क्योंकि वे समाज से परे हैं। नए नैतिक मानव को यह अहसास होगा कि उसे सेक्स के *दोनों* कार्य पूरे करने होंगे। वह पाएगा कि अगर वह प्रेम नहीं करता तो उसे यौन क्रिया में भी कोई आनंद नहीं मिल सकेगा। (डॉन जुआन स्पेन के एक दिलफेंक नायक हैं जो महिलाओं को प्रेम के रोमांच में फँसाते हैं।)

हस्तमैथुन

अधिकांश बच्चे हस्तमैथुन करते हैं। फिर भी युवावर्ग को कहा जाता है कि हस्तमैथुन पाप है। यह विकास को बाधित करता है, रोग पैदा करता है, आदि आदि। अगर विवेकवान माता अपने शिशु के शरीर के निचले हिस्सों की प्रारम्भिक तलाश को अनदेखा करे तो हस्तमैथुन की बाध्यता भी शायद इतनी न बढ़े। क्योंकि वर्जना ही बच्चे की रुचि को इस कदर केन्द्रित कर देती है। एक नन्हे शिशु के लिए गुप्तांग से अधिक कोमोत्तेजक उसका मुख होता है। अगर माताएँ मुख की क्रियाओं के प्रति भी उसी प्रकार की सदचरित्रता का दृष्टिकोण अपनातीं जैसा वे जननांगों की गतिविधियों के प्रति अपनाती हैं तो अँगूठा चूसना और चुम्बन भी अन्तःकरण का मसला बन जाते।

हस्तमैथुन आनन्द की कामना को शान्त करता है, क्योंकि वह तनाव का चरमोत्कर्ष होता है। पर जैसे ही यह क्रिया पूरी होती है नैतिक उपदेश से सराबोर अन्तःकरण चीख उठता है, "तुम पापी हो?" मेरा अनुभव यह रहा है कि अपराधबोध की

भावना हटते ही हस्तमैथुन में बच्चे की रुचि भी कम हो जाती है। शायद कुछ माता-पिता को अपने बच्चे का अपराधी होना उसके हस्तमैथुनी होने से अधिक स्वीकार्य है। मैंने हस्तमैथुन के दमन को ही कई बाल अपराधों की जड़ पाया है।

एक ग्यारह वर्षीय बच्चा समरहिल आया था। उसकी कई आदतों में से एक थी विद्रोहात्मकता। उसके पिता व शिक्षकों ने कई बार उसकी पिटाई की थी। पर इससे भी बुरी बात यह थी कि उसे नर्क की आग और क्रोधी ईश्वर के संकीर्ण धर्म में भी दीक्षित किया गया था। समरहिल आने के कुछ ही समय बाद उसने पेट्रोल की एक बोतल ली, उसे रंग और तारपिन के एक डिब्बे में डाला और फिर इस पूरे मिश्रण को आग लगा दी। दो सेवकों की मशक्कत से ही वह भवन बच पाया।

मैं उसे अपने कमरे में ले गया। "आग क्या है?" मैंने पूछा।

"वह जलती है," उसने कहा।

"इस समय किस तरह की आग के बारे में सोच रहे हो?" मैंने आगे पूछा।

"नर्क की," उसका कहना था।

"और बोतल?"

"वह लम्बी वस्तु है जिसके छोर पर छेद है," उसने जवाब दिया।

(*एक लम्बी चुप्पी।*)

"उस छेद वाली वस्तु के बारे में बताओ," मैंने आगे पूछा।

"मेरी छुछ्छी के सिरे पर छेद है।"

"अपनी छुछ्छी के बारे में बताओ," मैंने कोमलता से पूछा। "क्या तुम उसे कभी छूते हो?"

"अब नहीं, पहले छूता था, पर अब नहीं।"

"क्यों नहीं?"

"क्योंकि एक्स साब (उसके पिछले मास्टर साब) ने बताया कि यह दुनिया का सबसे बड़ा पाप है।"

मैंने निष्कर्ष निकाला कि आग लगाने का काम हस्तमैथुन की क्रिया के बदले किया गया था। मैंने उससे कहा कि उसके मास्साब गलती पर थे, उसका लिंग उसके नाक या कान जैसा ही है, न उनसे अच्छा, न बुरा। उस दिन के बाद आग में उसकी रुचि गायब हो गई।

जब प्रारम्भिक हस्तमैथुन में कोई समस्या न रही हो तो बच्चे स्वाभाविक रूप से समय के साथ विषमलैंगिक यौन सम्बंध की दिशा में बढ़ते हैं। कई वैवाहिक सम्बंध

इसलिए इतने दुखद होते हैं क्योंकि पति-पत्नी दोनों ही अवचेतन रूप से कामुकता के प्रति घृणा से भरे होते हैं। यह घृणा उपजती है उस दफनाई हुई आत्म घृणा से जो बचपन में हस्तमैथुन की वर्जना के साथ उन पर लाद दी गई थी।

शिक्षा में हस्तमैथुन का प्रश्न बेहद महत्वपूर्ण है। अगर हस्तमैथुन की समस्या का समाधान न हो तो विषयों को पढ़ाना, अनुशासन, खेल-कूद सब व्यर्थ हैं। हस्तमैथुन की स्वतंत्रता का अर्थ है प्रफुल्ल, प्रसन्न, उत्साही बच्चे जिनकी वास्तव में हस्तमैथुन में इतनी रुचि भी नहीं है। हस्तमैथुन की वर्जना का अर्थ है दुखी, अप्रसन्न बच्चे जो सर्दी-जुकाम और छूत की बीमारियों से परेशान रहते हैं। जो खुद से और इसीलिए दूसरों से घृणा करते हैं। मैं कहता हूँ कि समरहिल में प्रसन्नचित्त बच्चों का मूल कारण है यौन वर्जना से उपजे भय और आत्मघृणा का न होना।

फ्रॉयड ने हमें इस विचार से तो परिचित करा ही दिया है कि सेक्स का अस्तित्व जीवन की शुरुआत से ही होता है। बालक चूसने में यौन आनन्द पाता है। क्रमशः कामोत्तेजना का क्षेत्र मुख से हटकर गुप्तांग पर चला जाता है। अर्थात शिशु में हस्तमैथुन भी एक प्रकार की खोज होती है। और शुरुआत में इतनी महत्वपूर्ण खोज भी नहीं होती, क्योंकि उसे वहाँ से उतना सुख भी नहीं मिलता जितना उसे मुख या त्वचा से मिलता है। यह तो माता-पिता की वर्जना ही है जो हस्तमैथुन को एक भारी मनोग्रन्थि बना डालती है। जितनी कठोर वर्जना, उतना ही गहरा अपराधबोध और उतनी ही उसे बार-बार करने की बाध्यता।

सही तरह से पाले गए बच्चे को हस्तमैथुन के प्रति बिना किसी अपराधबोध के ही स्कूल आना चाहिए। समरहिल की शिशुशाला में अगर हों, तो कम ही बच्चे ऐसे हैं जिनकी हस्तमैथुन में विशेष रुचि है। उनके लिए यौन रहस्यात्मक आकर्षण नहीं रखता। हमारे पास आने पर शुरू से ही, अगर उन्हें घर में न बताया गया हो तो वे जन्म सम्बंधी तथ्यों से परिचित हो जाते हैं। वे केवल यह ही नहीं जानते कि बच्चे कहाँ से आते हैं, बल्कि यह भी कि बच्चे कैसे बनते हैं। कम उम्र में यह जानकारी वे बिना भावनात्मक प्रतिक्रिया के स्वीकारते हैं, क्योंकि यह जानकारी भी बिना भावनाएँ जताए ही दी जाती है। इसलिए पन्द्रह या सत्रह वर्ष में आते-आते समरहिल के लड़के-लड़कियाँ बिना झिझक और अपराध-बोध के, बिना अश्लीलता के यौन चर्चा कर पाते हैं।

माता-पिता छोटे बच्चों से ईश्वर की आवाज़ में बोलते हैं। माँ जो कुछ सेक्स के बारे में कहती है वह वेदवाक्य होता है। बच्चा उसके सुझाव को जस का तस स्वीकारता है। एक बच्चे से उसकी माँ ने कहा कि हस्तमैथुन तुम्हें बेवकूफ बना देगा। उसने बात मानी और उसमें कुछ भी सीखने की क्षमता नहीं रही। जब उसकी माँ को समझाया गया कि वह बच्चे से कहे कि उसने कोरी बकवास की थी

तो वह स्वतः ही बेहतर लड़के में परिवर्तित हो गया।

एक दूसरी माँ ने अपने बेटे से कहा कि अगर वह हस्तमैथुन करेगा तो सब उससे घृणा करेंगे। वह बच्चा ठीक वैसा ही बना जैसा माँ ने संकेत किया था। पूरे स्कूल में उसे कोई नहीं चाहता था। वह चोरी करता था, लोगों पर थूकता था और तोड़फोड़ करता था। माँ के सुझाव को सच साबित करने के ही ये प्रयास थे। इस दृष्टान्त में माँ को यह समझाया न जा सका कि वह बच्चे के सामने अपनी गलती कबूल कर ले। और वह बच्चा कमोबेश समाज से घृणा करने वाला ही रहा।

हमारे यहाँ ऐसे भी लड़के आए जिनसे कहा गया था कि हस्तमैथुन से वे पागल हो जाएँगे। वे सच में पागल बनने की कोशिश में जुटे रहे।

बच्चे को प्रारम्भ में माता-पिता जो सुझाव देते हैं उनको बाद में पूरी तरह काट पाना सम्भव हो, इसमें मुझे शंका है। अपने काम में मेरी कोशिश रहती है कि मैं माता-पिता से ही उनकी भूल सुधरवाऊँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि बच्चे के लिए मैं नगण्य हूँ। अक्सर मैं उसके जीवन में तब दाखिल होता हूँ जब देर हो चुकती है। अतः जब बच्चा मुझे यह कहते सुनता है कि हस्तमैथुन से लोग पागल नहीं होते हैं, तो वह मुझ पर विश्वास नहीं कर पाता है। परन्तु पाँच वर्ष की उम्र में सुनी गई पिता की आवाज़ उसके लिए खुदा की आवाज़ होती है।

जिस समय शिशु अपनी क्रीड़ा में गुप्तांग को शामिल करता है, वह माता-पिता की भारी परीक्षा होती है। गुप्तांग क्रीड़ा को अच्छा, स्वाभाविक व स्वस्थ मानना चाहिए। उसे दबाने की कोई भी चेष्टा खतरनाक होगी। इसमें मैं बच्चे का ध्यान दूसरी ओर बाँटने वाली, गुपचुप और बेईमान कोशिशों को भी शामिल करता हूँ।

मुझे एक आत्मसंचालित नन्ही की बात याद है जिसे एक अच्छी-सी दिवसशाला में भेजा गया। वह दुखी नज़र आने लगी। उसने अपनी गुप्त क्रीड़ा को *सटना* नाम दिया हुआ था। जब उसकी माँ ने जानना चाहा कि उसे शाला जाना क्यों पसन्द नहीं आता, उसका जवाब था, "जब मैं सटना चाहती हूँ तो वे मुझे ऐसा करने से मना तो नहीं करते, पर तुरन्त कहते हैं, *यह देखो* या *यहाँ आकर यह तो करो*। सो मैं शिशुशाला में सट नहीं पाती।"

शैशवावस्था की गुप्तांग क्रीड़ा इसलिए समस्या है क्योंकि लगभग सभी माता-पिता अपने पालकों से ही यौन विरोधी तौर तरीकों से अनुकूलित किए गए हैं और वे शर्म, पाप और जुगुप्सा की भावनाओं से उबर नहीं पाते। यह सम्भव है कि कोई पिता बौद्धिक स्तर पर यह स्वीकार ले कि गुप्तांगों से खेलना बुरा नहीं, अच्छा है, स्वस्थ है। पर साथ ही वह अपनी ध्वनि या दृष्टि से बच्चे को यह भी जता दे कि अपने गुप्तांग से खेलने के बच्चे के अधिकार को भावनात्मक रूप से वह नहीं स्वीकारता है। सम्भव यह भी है कि कोई माता या पिता बच्चे द्वारा गुप्तांग छूने

का अनुमोदन भी करते हों। पर जैसे ही उनकी बुजुर्ग ताई मिलने आएँ तो वे परेशान हो उठते हों। कहीं बच्चा उनके सामने कुछ न कर डाले। दरअसल वह बुजुर्ग ताई, आपके दमित स्व के यौन विरोधी तत्व का ही प्रतिनिधित्व करती है पर यह कहने से न तो बच्चे की कोई मदद होती है, न ही माता-पिता की।

माता-पिता के मन का यह भय काफी व्यापक है कि शैशवावस्था का गुप्तांग खेल बच्चे में समय से पूर्व यौनेच्छा तो नहीं जगाएगी। सच तो यह है कि यह महज़ तार्किक व्याख्या है। यौनांग से खेलना समय से पहले परिपक्व नहीं बनाता, और अगर बनाता भी हो तो क्या? अगर किसी बच्चे को किशोरावस्था में यौन में असामान्य रुचि रखने वाला बनाना हो तो सबसे सुनिश्चित उपाय है पालने में ही उसे गुप्तांग से खेलने से रोक देना।

जब बच्चा समझने की स्थिति में आ जाए तो उसे यह कहना पड़ सकता है कि उसे सार्वजनिक रूप से सबके सामने अपने गुप्तांग से नहीं खेलना चाहिए। सम्भव है कि बच्चा इस सुझाव को कायरता से भरा और अन्यायपूर्ण सुझाव माने, पर इसका विकल्प और भी खतरनाक सिद्ध हो सकता है। क्योंकि अगर बच्चे को विद्वेष से भरे वयस्कों की नाराज़गी और कड़े विरोध का सामना करना पड़े तो वह कहीं खतरनाक सिद्ध होगा। इस स्थिति से कहीं बेहतर यह है कि बच्चे को प्यार करने वाले माता-पिता उसे तर्क देकर समझा-बुझा दें।

जब किसी छोटे बच्चे को उसका जीवन समग्रता से, बिना दण्ड, निर्देश और वर्जनाओं के जीने दिया जाता है तो उसकी रुचियाँ मात्र उसके यौनांग की क्रिया तक सीमित नहीं रह पातीं। वे व्यापक हो उठती हैं।

मुझे इस बात का व्यक्तिगत अनुभव नहीं है कि आत्मसंचालित बच्चे गुप्तांग खेल में एक दूसरे के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करते हैं। जिन लड़कों को शुरू से यह सिखाया जाता है कि यौन पाप है, वे गुप्तांग खेल को दूसरों को सताने के साथ जोड़ लेते हैं। परन्तु क्योंकि आत्मसंचालित बच्चों में आक्रामक घृणा तुलनात्मक रूप से कम होती है, शायद उनका गुप्तांग खेल अन्य साथियों के प्रति अधिक कोमल होता होगा।

आत्मनिन्दा का भाव हममें मुख्यतः शैशवावस्था के अनुभवों से ही जन्मता है। इसका अधिकतर हिस्सा हस्तमैथुन के कारण जगे अपराधबोध का ही है। मैं अक्सर उन बच्चों को अधिक दुखी पाता हूँ जिनका मन हस्तमैथुन को लेकर भारी रहता है। एक समस्याग्रस्त बच्चे को एक प्रसन्नचित्त बच्चे में बदलने की दिशा में सबसे बड़ा कदम है उसके मन से अपराध-बोध को बाहर निकाल देना।

नग्नता

कई दम्पत्ति, खासकर श्रमजीवी वर्ग के दम्पत्ति, एक-दूसरे के शरीर को तब तक नहीं देखते, जब तक उनमें से एक अपने जीवनसाथी के शव को अन्तिम संस्कार के लिए तैयार न कर रहा हो। एक खेतिहर महिला, जिससे मैं परिचित था, नग्नता प्रदर्शन के एक मामले में गवाह थीं। वह सच में सदमे में थीं। मैंने उन्हें झिड़कते हुए कहा, "चलो छोड़ो जी, आखिर तुमने भी तो सात बच्चों को जना है।"

उसने पूरी गम्भीरता से उत्तर दिया, नील साब, "मैंने अपने पूरे वैवाहिक जीवन में आदमी को बिना कपड़ों के नहीं देखा।"

नग्नता को कभी-भी हतोत्साहित नहीं करना चाहिए। शिशु को शुरू से ही अपने माता-पिता को नग्न देखना चाहिए। पर साथ ही जब वह समझने की स्थिति में आ जाए तो उसे बता देना चाहिए कि कई लोग बच्चों को नंगा देखना पसन्द नहीं करते। ऐसे लोगों के सामने कपड़े पहनना सही रहता है।

एक महिला थीं जिनकी शिकायत थी कि हमारी बेटी समुद्र में अपनी *प्राकृतिक अवस्था* में नहाती है। उस वक्त ज़ोई मात्र एक वर्ष की थी। यह दृष्टान्त हमारे समाज के जीवन-विरोधी नज़रिए को समेटता है। हम जानते हैं कि समुद्र तट पर नहाते समय तथाकथित गुप्तांगों को छिपाने का प्रयास अक्सर उलझन भरा सिद्ध होता है। आत्मसंचालित बच्चों के माता-पिता अपने तीन-चार वर्षीय बच्चे को यह समझाने में कठिनाई महसूस करते हैं कि उसे सार्वजनिक स्थलों पर नहाने वाले कपड़े (बेदिंग-सूट) का उपयोग करना ज़रूरी है।

क्योंकि यौनांगों का प्रदर्शन कानूनन ज़ुर्म है इसलिए ज़ाहिर है कि बच्चों का मानव शरीर के प्रति दृष्टिकोण इस नज़रिए से प्रभावित होता है। बच्चों में नग्नता के साथ जुड़ी पाप की भावना को तोड़ने के लिए मैं खुद निर्वस्त्र होकर नहाया हूँ। इतना ही नहीं मैंने अपने साथ काम करने वाली एक शिक्षिका को भी बच्चों की जिज्ञासा शान्त करने के लिए निर्वस्त्र नहाने के लिए प्रोत्साहित किया है। पर यह भी भूल होगी कि बच्चों को निर्वस्त्र होने के लिए बाध्य किया जाए। वे सवस्त्र सभ्यता की उपज हैं। उनके लिए निर्वस्त्रता वह चीज़ है जिसकी कानून अनुमति नहीं देता।

कई साल पहले, जब हम लाइस्टन आए ही थे, हमारे पास एक बत्तख-ताल था।

मैं सुबह पहले उसमें डुबकी लगाया करता था। कुछ शिक्षक-शिक्षिकाएँ और छात्र-छात्राएँ भी यही किया करते थे। तब हमारे पास निजी स्कूल के लड़कों की टोली आई। जब लड़कियाँ बेदिंग-सूट पहनने लगीं तो मैंने एक स्वीडिश लड़की से जानना चाहा कि वह ऐसा क्यों करने लगी है।

नये लड़कों के कारण, उसने साफ किया, "पुराने लड़कों के लिए नग्नता स्वाभाविक-सी बात थी। पर ये नए लड़के घूरते हैं - मुझे यह अच्छा नहीं लगता।" इसके बाद सामूहिक रूप से बिना वस्त्रों के नहाने की परिपाटी उन शामों तक सीमित रह गई जब हम समुद्र तट पर जा पाते थे।

समरहिल के मुक्त वातावरण में यह उम्मीद की जा सकती थी कि गर्मियों में बच्चे निर्वस्त्र घूमते होंगे। पर यह वे नहीं करते। नौ साल तक की आयु की बच्चियाँ किसी बेहद गर्म दिन में निर्वस्त्र नज़र आ जाती हैं पर छोटे लड़के ऐसा बिरले ही करते हैं। यह बात कुछ समझ नहीं आती। खासकर फ्रॉयड के इस कथन के सन्दर्भ में कि लड़कों में अपने गुप्तांग को लेकर गर्व का भाव होता है और लड़कियों में उसके न होने के कारण शर्म।

हमारे नन्हे लड़कों में प्रदर्शन की भावना नज़र नहीं आती, बड़े लड़के और लड़कियाँ भी कभी कपड़े नहीं उतारते। गर्मियों में लड़के और पुरुष सिर्फ़ नेकर पहनते हैं, कमीज़ नहीं। और लड़कियाँ बेदिंग-सूट पहनती हैं। नहाने को लेकर कोई गुप्त भाव नहीं है। हाँ कुछ लड़कियाँ खेतों में धूप स्नान करती हैं पर उनको लुक-छिपकर ताकने की कोशिश कोई लड़का नहीं करता।

एक दिन हमारे अँग्रेज़ी शिक्षक को हॉकी फील्ड में, नौ से पन्द्रह वर्ष की आयु की लड़कियों व लड़कों की मदद से गड्ढा खोदते देखा गया। वह दिन गर्म था और उन्होंने कपड़े उतार दिए थे। दूसरी मर्तबा हमारे कार्यकर्ताओं में से एक निर्वस्त्र टेनिस खेलता नज़र आया। उससे कहा गया कि स्कूल की बैठकों में वह पैंट पहनकर आए ताकि अगर कोई अकस्मात आ पहुँचे तो उसे उलझन न हो। ये सभी दृष्टान्त समरहिल में नग्नता के प्रति पूर्णतः नैसर्गिक नज़रिए को स्पष्ट करते हैं।

पोर्नोग्राफी (अश्लील साहित्य)

सभी बच्चे अश्लील होते हैं, कभी खुल्लम-खुल्ला तो कभी गुप्त रूप से। केवल उनमें अश्लीलता की भावना कम होती है जिन्हें शैशवावस्था या बाल्यावस्था में सेक्स के प्रति नैतिक वर्जनाओं का सामना नहीं करना पड़ा हो। मेरा पक्का विश्वास है कि कालान्तर में समरहिल के छात्र-छात्राओं में अश्लीलता के प्रति उतना रुझान

नहीं होगा जितना कि उन बच्चों में होता है जिन्हें गुपचुप तरीकों से पोषित किया जाता है। विश्वविद्यालय में पढ़ रहा हमारा एक पूर्व छात्र छुट्टियों में आया। उसकी टिप्पणी थी, "समरहिल एक तरह से सबको बिगाड़ देता है। अपनी उम्र के लड़के इतने उबाऊ लगने लगते हैं। वे बस उन्हीं-उन्हीं बातों में मशगूल रहते हैं, जिनसे मैं सालों पहले उबर चुका हूँ।"

"अश्लील किस्से?" मैंने पूछा।

"हाँ, कमोबेश वही सब। मुझे भी कभी-कभार अश्लील किस्से अच्छे लगते हैं, पर जो वे सुनाते हैं वे किस्से फूहड़ और सारहीन होते हैं। पर बात सिर्फ सेक्स की नहीं है। बाकी सब कुछ भी - मनोविज्ञान, राजनीति। अजीब बात यह है कि मेरी दोस्ती उन लोगों से होने लगी है जो मुझसे दस साल बड़े हैं।"

समरहिल में आए एक नए लड़के ने, जो प्राथमिक शाला के लिजलिजे चरण से उबरा नहीं था, अश्लील बातें करने की कोशिश की। दूसरों ने उसे चुप करवा दिया। इसलिए नहीं कि वह अश्लील बात कह रहा था। बल्कि इसलिए कि वह एक रोचक बातचीत को बहका रहा था।

कुछ साल पूर्व समरहिल में तीन छात्राएँ थीं जो वर्जित विषयों के सामान्य चरण को पार कर चुकी थीं। कुछ समय बाद एक लड़की समरहिल आई। उसे इस त्रिमूर्ति के कमरे में ठहराया गया। एक दिन वह नई लड़की मुझसे शिकायत करने लगी कि तीनों बेहद उबाऊ लड़कियाँ हैं। "मैं रात को जब सेक्स वगैरह की बातें छेड़ती हूँ तो वे मेरा मुँह बन्द करवा देती हैं। कहती हैं कि इस बकवास में उनकी रुचि नहीं है।"

यह बात सच थी। इस त्रिमूर्ति की भी सेक्स में रुचि थी पर उसके गुप्त पक्ष में नहीं। उनके मन में यह भावना टूट चुकी थी कि सेक्स गन्दगी भरा विषय है। लड़कियों के स्कूल से आई सेक्स की गुपचुप चर्चा से भरी उस छात्रा को वे नैतिकता से ओतप्रोत लगीं। और सच भी यही था कि वे बेहद नैतिक *थीं*। इसलिए क्योंकि उनकी नैतिकता ज्ञान पर आधारित थी, अच्छे व बुरे के किसी झूठे मानदण्ड पर नहीं।

जिन बच्चों को यौन मसलों के बारे में स्वतंत्रता से पाला-पोसा जाता है वे तथाकथित अश्लीलता को लेकर मानसिक रूप से खुले होते हैं। एक अर्सा पहले लंदन के मनोरंजन स्थल में एक विविध मनोरंजक कार्यक्रम सुना। मुझे तत्काल लगा कि अगर वह समरहिल में अपने किस्से सुनाता तो श्रोता इस कदर नहीं हँसते। पर जब-जब वह महिलाओं के अंतर्वस्त्रों की बात करता लंदन की महिलाएँ चीख-चीखकर लोटपोट हुई जा रही थीं। समरहिल के बच्चों को उसकी ये बातें पसन्द नहीं आतीं।

एक बार मैंने शिशुशाला के बच्चों के लिए एक नाटक लिखा। नाटक काफी घटिया था। कहानी एक लकड़हारे के बेटे की थी जिसे सौ पाउण्ड का नोट मिला था। उसने नोट परिवार के हरेक सदस्य को दिखाया, अपनी गाय तक को भी। गाय उस नोट को चबा गई। परिवार ने नोट निकालने की बहुतेरी कोशिश की पर असफल रहे। लड़के को एक बेहतरीन विचार सूझा कि परिवार वाले मेले में एक बूथ खोलें और हर आने वाले से दो मिनट के दो शिलिंग लें। अगर दर्शक की मौजूदगी में गाय वह नोट बाहर निकाल दे, तो नोट दर्शक को ईनाम में मिलेगा।

मुझे मालूम था कि अगर वह नाटक वेस्ट एण्ड में खेला जाता तो बड़ा लोकप्रिय होता। पर हमारे बच्चों को उसमें कोई खासियत नहीं लगी। बल्कि कलाकारों को, जो छह से नौ वर्ष की उम्र के थे, उसमें कुछ मज़ाकिया नज़र ही नहीं आया। एक आठ वर्षीय बालिका ने मुझसे कहा कि नाटक में उचित शब्द का इस्तेमाल न करना बेवकूफी है। दरअसल उसका इशारा उस शब्द की ओर था जो लोगों को *अनुचित* लगता।

समरहिल में मुक्त बच्चों में दृश्यतिकता (कामुकता) की बीमारी नहीं मिलेगी। किसी फिल्म में अगर पखाने को दर्शाया जाए या प्रसव की बात हो, तो हमारे छात्र-छात्राएँ न तो ठिठियाते हैं न उन्हें शर्म आती है। पखाने की दीवारों पर लिखने का बुखार उन्हें भी बीच-बीच में चढ़ता है। एक बच्चे के लिए किसी भी घर का सबसे रोचक कमरा टॉयलेट होता है। वह उसके मन के लेखक और चित्रकार को प्रेरित करता है। जो स्वाभाविक है क्योंकि वह रचनात्मकता की जगह है।

यह कहना भ्रान्ति है कि महिलाओं का दिमाग पुरुषों की तुलना में अधिक साफ-सुथरा होता है। फिर भी पुरुषों के शराबखानों में महिलाओं के क्लब की तुलना में कहीं अधिक अश्लीलता की सम्भावना होती है। पर घटिया किस्से सुनाने का चलन महज़ इसलिए है क्योंकि वे समाज में अकथनीय माने जाते हैं। जिस समाज में यौन-दमन न हो वहाँ अकथनीयता का विचार भी गायब हो जाएगा। समरहिल में ऐसा कुछ भी नहीं जिसे अकथनीय माना जाता हो और कोई भी व्यक्ति, किसी भी कथन से सकते में नहीं आता। क्योंकि *सकते में आने का अर्थ यह होता है कि जो वस्तु आपको सकते में लाती है उसमें आपकी अश्लील रुचि है।*

जो लोग भय से चीखते हैं कि बच्चों से उनका अबोधपन छीनना भारी जुर्म है, वे उस शुतुरमुर्ग के समान ही हैं जो बचने के लिए रेत में अपना सिर छुपा लेता है। बच्चे कभी पूर्णतः अबोध नहीं होते पर अक्सर अज्ञानी होते हैं। और इन शुतुरमुर्गों की भयातुरता, बच्चों से अज्ञानता छीनने के विरुद्ध है।

जो बच्चे सबसे ज़्यादा दबाए गए हैं वे भी दरअसल पूर्णतः अज्ञानी नहीं होते। दूसरे बच्चों से सम्पर्क द्वारा उन्हें वह भयावह 'ज्ञान' अन्धेरे कोनों में, गुपचुप प्राप्त हो

जाता है। जो बच्चे कम उम्र से समरहिल आ चुके हैं, उनके लिए अन्धेरे कोने नहीं हैं। इन बच्चों की भी यौन मसलों में रुचि है, पर यह रुचि अस्वस्थ रुचि नहीं है। जीवन के प्रति उनका नज़रिया एक स्वच्छ नज़रिया है।

समलैंगिकता

हाल में एक समलैंगिक व्यक्ति ने पत्र द्वारा मुझसे यह बताने का अनुरोध किया कि कौन सा देश उसे कानूनी रूप से समलैंगिक बने रहने का अधिकार देगा। मेरा उत्तर था कि मैं ऐसी कोई जगह के बारे में जानता तक नहीं। इस घटना के बाद मुझे पता चला कि हॉलैण्ड और डेनमार्क में समलैंगिकता को कानूनी स्वीकृति है। सच तो यह है कि मैं ऐसे किसी देश को भी नहीं जानता जो किसी को इतरलैंगिक सम्बंध भी काँटों पर चले बिना बनाने देता हो।

समरहिल में समलैंगिकता नहीं है। परन्तु समरहिल आने वाले बच्चों के सभी सामान्य समूहों की ही तरह उनके विकास के कुछ चरणों में अवचेतन समलैंगिकता मिलेगी।

हमारे नौ-दस वर्ष के लड़कों की लड़कियों में रत्ती भर रुचि नहीं है। वे अपनी ऐसी टोलियाँ बनाते हैं जिनकी दूसरे लिंग में कोई रुचि नहीं है। वे किसी को घेरकर 'हाथ खड़े करो' कहने में मज़ा लेते हैं। इस उम्र की लड़कियाँ भी हमउम्र लड़कियों की टोलियों में ही खुश रहती हैं। वयःसन्धि के बाद भी वे लड़कों के पीछे नहीं मँडरातीं। लगता यह है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों में अवचेतन समलैंगिकता की अवस्था अधिक लम्बे समय तक बरकरार रहती है। वे दोस्ताना तरीके से लड़कों को चुनौती ज़रूर देती हैं, पर अपने गुटों में बने रहना पसन्द करती हैं। सच तो यह है कि इस उम्र में वे अपने अधिकारों के प्रति बेहद सजग होती हैं। लड़कों के शारीरिक बल में श्रेष्ठता और रुखाई लड़कियों में नाराज़गी जगाती है। उनकी यह उम्र पौरुष की खिलाफत करने की होती है।

पन्द्रह-सोलह वर्ष की आयु के पहले, सामान्यतः लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे में रुचि नहीं लेते। उनमें एक-दूसरे के साथ युगल बनाने की स्वाभाविक वृत्ति भी नज़र नहीं आती। बल्कि विपरीत लिंगों में उनकी रुचि आक्रामक रूप ले लेती है।

विकास के क्रम में गुप्त समलैंगिकता चरण की अस्वस्थ प्रतिक्रिया समरहिल के बच्चों में इसलिए नज़र नहीं आती क्योंकि वे हस्तमैथुन को लेकर अपराधबोध से ग्रसित नहीं होते। कुछ साल पहले निजी स्कूल से ताज़ा-ताज़ा आए एक लड़के ने परपीड़न कामुकता (सोडोमी) को समरहिल में घुसाने की कोशिश की। वह

असफल रहा। उसे यह जानकर हैरानगी और चिन्ता हुई कि उसकी कोशिशों को पूरे स्कूल ने पहचान लिया था।

कुछ अर्थों में समलैंगिकता, हस्तमैथुन से जुड़ी है। आप किसी साथी के साथ हस्तमैथुन करते हैं और वह आपके अपराधबोध में भागीदार बनता है, आपका भार कुछ हल्का बना देता है। पर जहाँ हस्तमैथुन पाप न हो, वहाँ अपराधबोध बाँटने का प्रश्न भी नहीं उठता।

मैं नहीं जानता कि कौन-सा प्रारम्भिक दमन समलैंगिकता का कारण है। फिर भी इतना ज़रूर स्पष्ट लगता है कि यह दमन शैशवावस्था में शुरू हुआ होगा। आजकल समरहिल में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चे दाखिल नहीं किए जाते। अतः अक्सर ऐसे बच्चों से भी हमें निपटना पड़ता है जिन्हें शिशुशाला में गलत तौर-तरीकों से रखा गया था। फिर भी समरहिल के चालीस से अधिक वर्षों में यहाँ का एक भी बच्चा समलैंगिक नहीं बना। कारण यह है कि आज़ादी स्वस्थ बच्चों को पोषित करती है।

उच्छृंखलता, अवैधता और गर्भपात

उच्छृंखलता एक मनोरोग है। अन्ततः सही जीवन साथी ढूँढ पाने की तलाश में लगातार साथी बदलते जाने का उपक्रम है। पर यह सही साथी कभी नहीं मिलता क्योंकि कमी वास्तव में उस नपुंसक रोगवृत्ति वाले पुरुष या स्त्री में ही है।

मुक्त प्रेम का अगर कोई भयावह अर्थ है तो वह इसलिए क्योंकि वह ऐसी कामुकता को परिभाषित करता है जो रोगग्रस्त है। उच्छृंखल सम्भोग - जो प्रत्यक्ष दमन का नतीजा है - हमेशा ही दुखद और शर्मनाक होता है। जो लोग वास्तव में मुक्त हैं उनमें मुक्त प्रेम का अस्तित्व ही नहीं होगा।

दमित कामुकता स्वयं को किसी भी वस्तु से जोड़ देती हैः दस्ताना, रुमाल, शरीर से जुड़ी कोई भी वस्तु। यही कारण है कि मुक्त प्रेम उच्छृंखल होता है, इसमें कोई कोमलता, कोई ऊष्मा, वास्तविक स्नेह नहीं होता।

एक युवती ने कई उच्छृंखल सम्बंधों के बाद मुझसे कहा, "बिल के साथ पहली बार कामोत्तेजक रिश्ता बन सका है।"

मैंने जानना चाहा कि ऐसा रिश्ता पहली बार क्यों रहा।

"क्योंकि मैं उससे *प्यार* करती हूँ, और दूसरों से नहीं करती थी।"

जो बच्चे बड़ी उम्र में, तेरह वर्ष या उसके बाद समरहिल आते हैं, उनमें हमेशा

वास्तविकता में नहीं तो कामना में उच्छृंखलता की वृत्ति ही नज़र आती है। उच्छृंखलता की जड़ें बच्चे के जीवन में पीछे तक छिपी होती हैं। हम एक ही मुख्य बात जानते हैं, वह यह कि ये जड़ें बीमार जड़ें हैं। ऐसा व्यवहार विविधता ज़रूर दे सकता है पर सन्तोष बिरले ही और आनन्द तो कभी नहीं। प्रेम में वास्तविक आज़ादी कभी उच्छृंखलता की ओर नहीं ले जाती। यह सच है कि प्रेम हमेशा-हमेशा बरकरार नहीं रहता। पर स्वस्थ लोगों के लिए *प्रेम* चिरस्थाई न भी हो तो भी निष्ठामय और आनन्दमय होता है।

अवैध बच्चों की राह अक्सर बेहद कठिन होती है। पर कुछ माताओं की तरह उनसे यह कहना गलत होगा कि उसका पिता युद्ध में या रोग से मर गया। जब वह दूसरे लड़कों को उनके पिता के साथ देखता है तो आहत होता है। साथ ही नाजायज़ संतान होने की सामाजिक प्रताड़ना किसी न किसी तरह उस तक पहुँच ही जाती है। समरहिल में भी कुछ अविवाहित माताओं के बच्चे हैं, पर उनसे किसी को रत्ती भर का फर्क नहीं पड़ा है। आज़ादी के माहौल में ऐसे बच्चे, वैवाहिक सम्बंधों से जन्मे बच्चों की ही तरह प्रसन्नचित्त फलते-फूलते हैं।

बाहरी दुनिया में नाजायज़ बच्चा कई बार अपनी माँ को दोषी मानता है, उससे दुर्व्यवहार करता है। या फिर अपनी माँ से इतना प्यार करता है कि इस बात से डरने लगता है कि कहीं, किसी रोज़ वह ऐसे किसी इन्सान से शादी न कर ले जो उसका पिता न हो।

यह दुनिया भी कितनी अजीब है! एक ओर गर्भपात गैर-कानूनी है तो दूसरी ओर नाजायज़ संतान को सामाजिक प्रताड़ना सहनी पड़ती है। यह सन्तोष की बात है कि आज कई महिलाएँ विवाहेत्तर संतानों की सामाजिक निन्दा की परवाह नहीं करतीं। वे खुल्लम-खुल्ला प्रेम सम्बंध से जन्मे बच्चों को स्वीकारती हैं, उन पर गर्व करती हैं, उनके लिए काम करती हैं, उनकी परवरिश करती हैं, और तो और वे यह सब खुशी-खुशी करती हैं। जहाँ तक मैंने पाया है, उनके बच्चे भी संतुलित और ईमानदार इन्सान बन पाते हैं।

किसी भी निजी शाला में ऐसी किसी महिला की नौकरी नहीं बच पाती जिसकी नाजायज़ संतान हो। मैंने न जाने कितनी बार पादरियों की बीबियों को घरेलू नौकरानी को काम से इसलिए निकाल देने के किस्से सुने हैं, क्योंकि वे गर्भवती हो गईं थीं।

मानवता के रोगग्रस्त होने का जो सबसे कुत्सित और दोगला लक्षण है, वह है गर्भपात का सवाल। न्यायाधीशों, पादरियों, चिकित्सकों या समाज के स्तम्भ कहलाए जाने वालों में ऐसा एक भी इन्सान नहीं होगा जो अपनी बेटी को

नाजायज़ संतान की माता बनाने के बदले उसका गर्भपात करवाना नहीं पसन्द करेगा।

सम्पन्न लोग ऐसी उलझन भरी पेचीदगी से बचने के लिए अपनी बेटियों को उम्दा नर्सिंग होम में भेज देते हैं। कहने के लिए वे उसे माहवारी की अनियमितता या किसी दूसरे रोग के इलाज के नाम पर भेजते हैं। पर, निम्न मध्यम वर्ग या गरीब तबके के लोगों को नाजायज़ संतानों का बोझा उठाना पड़ता है। उनके पास कोई दूसरा विकल्प होता ही नहीं है। कोई मध्यवर्गीय लड़की बहुतेरी कोशिश करे तो उसे कोई चिकित्सक मिल जाता है, जो मोटी फीस लेकर गर्भपात करवा दे। पर उसकी गरीब बहनें किसी अप्रशिक्षित और अनैतिक चिकित्सक का सहारा लेने पर या फिर नाजायज़ बच्चा पैदा करने को मजबूर हैं।

लंदन में कई चिकित्सालय हैं जहाँ गर्भनिरोधक लगवाए जा सकते हैं। पर वह भी तब जब वे अपने विवाहित होने का सबूत पेश करें। अपनी विवाह की अँगूठी दिखाएँ। यह बात और है कि किसी दूसरे की विवाह की अँगूठी उधार लेना कोई जुर्म नहीं है।

यह पूरा मामला सार्वजनिक मूत्रालयों की दीवारों पर लिखी अश्लील बातों की याद दिलाता है। यह उस सभ्यता का प्रतीक है जिसकी विद्वेष भरी नैतिकता की कीमत उसे इस रूप में चुकानी पड़ती है। यह कीमत है शरीर के प्रति रोगग्रस्त नज़रिया, दुख और आशाहीनता।